International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 02-09-2020; Accepted: 17-09-2020; Published: 03-10-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 72-74

कल्हण कालीन कश्मीर की संस्कृति

पूनम कुमारी
शोध छात्रा, इतिहास विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत

सारांश

कल्हण द्वारा रचित राजतरंगिणी में कश्मीर की सभ्यता संस्कृति का उस काल के संदर्भ में जो विवरण दिया गया है उसका विश्लेषण प्राय अवैज्ञानिक ढंग से किया जाता रहा है। इसकी व्याख्या करने वाले इतिहासकार या अर्थशास्त्री आज भी शोध के उन्हीं औजारों, प्रवृतियों और सिद्धान्तों के आधार पर इसकी व्याख्या करते हैं जो कल्हण कालीन कश्मीर में वर्त्तमान थी। मगर आज शोध की नई-नई विधिओं का अविब्कार शोध के वैज्ञानिक तौर पर विकसित औजार ; शोध के नए तरीके और सिद्धान्त आज शोध की पुरानी प्रक्रिया को एक दम पीछे छोड़ शोध के नए सिद्धान्तों और आधारों पर समस्या का विवेचन किए जाने पर ज्यादा विश्वसनीय निष्कर्ष सामने आते हैं।

कल्हण कालीन कश्मीर की संस्कृति सभ्यता कला आदि का मूल्यांकन करने में मूल्यांकनकर्ता पारिणाम को ही कारण मान कर मूल्यांकन किए हैं। जैसे देव मंदिरों में फली - फूली संस्कृति ने जिन अनैतिक आचरणों को पैदा किया इसका कारण क्या था- इसकी व्याख्या न कर राजाओं और कुलीन वर्गो की यौन इच्छा को कारण मान लिया गया है, जबकि यह उस संस्कृति का परिणाम है - कारण की खोज किया जाना ज्यादा महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत लेख इस तरह की लेरवन प्रवृति को अवैज्ञानिक मानता है और एक वैज्ञानिक शोध पदृति के आधार पर इसकी व्याख्या का प्रयास किया है। इस लेख को "आधार और संरचना" की वैज्ञानिक शोध पद्धति के आधार पर विश्लेषित किया गया है।

मूल शब्द: आयाम, माल, उत्पादन प्रणाली, उत्पादन शक्तियाँ, सामंती उत्पादन प्रणाली

प्रस्तावना

किसी क्षेत्र या देश में किसी काल बिशेष में उस देश की संस्कृति और साहित्य अथवा इतिहास या शान के और किसी स्वरूप पर विचार किए जाने के लिए यह जरूरी है कि समस्या को एक एक वैज्ञानिक फ्रेम में रख कर उस काल की व्याख्या सम्पूर्ण विकास के परस्पर सम्बन्धों, विरोधी प्रवृतियों के परस्पर संवंन्धो भादि के आधार पर किया जाय।इस सैद्धान्तिक पक्ष का सबसे महत्वपूर्ण भाग है यह पता लगाना कि उस खास काल में मौलिक कस्तुओं के उत्पादन के मुख्य साधन क्या थे और उन उत्पादन के साधनों के स्वामित्व का आधार और तरीका क्या था, उत्पादन का लक्ष्य "माल" 1 पैदा करना था या सामाजिक उपयोग के लिए वस्तुओं का उत्पादन होता था।उत्पादन के साधनों के स्वामित्व का स्वरूप क्या था-व्यक्तिगत स्वामित्व वाली उत्पादन प्रणाली या सामाजिक स्वामित्व वाली उत्पादन प्रणाली।समाज और संस्कृति के विकास के स्वरूप को समझने के लिए यह जरूरी है विकास का विश्लेषन इस आधार पर किया जाय कि उस खास काल में भोतिक बस्तुओं का उत्पादन के साधनों का स्वामित्व का स्वरू१ क्या था। क्योंकि किसी भी समाज में उत्पादन का यही स्वरूप उस समाज का बुनियादी आधार होता है और इसी बुनियादी आधार के अनुसार उस काल में उस समाज की बाहरी संरचनाएँ-सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा शादी व्याह आदि से लेकर राजसत्ता के चरित्र तक का और उस समाज के सदस्यों की चेतना तक का निर्माण इसी "आधार" के अनुरूप अपना स्वरूप विकसित करते हैं। इस कारण एक वैज्ञानिक शोध-परक विश्लेषण के लिए "आधार और संरचना" के नियम के आधार पर विवेचन किया जाना जरूरी है।

प्रस्तुत लेख इस उपर वर्णित 'आधार और संरचना' के नियम के आधार पर लिखा गया एक शोध परक लेख है जो कश्मीर के संम्वन्धों में जो व्यवरा विभिन्न तरह के शोध परक और विश्वसनीय आकड़ों के आधार पर वताता है कि कश्मीर का हर्ष की मृत्यु के पश्चात का इतिहास खून-खरावे से युक्त था।इस अशान्त राजनीतिक वातावरण का कारण था कश्मीर में सामंतवादी शासन प्रणाली की मौजूदगी जिसमें जमीन उत्पादन का प्रमुख श्रोत होती है जमीन का स्वामित्व जमीन्दारो के पास रहता है और इसके शीर्ष पर राजा सवसे वड़ा भूस्वामी होता है।राज्य के राजस्व का सबसे वड़ा श्रोत जमीन होती है, इस कारण सामंती राज्य लगातार अपने राज्य की सीमा विस्तार के लिए आपस में संघर्षरत रहते हैं।राज्य छोटे छोटे होते हैं,उत्पादन के औजार अविकसित होते हैं और गुलामी प्रथा वाले समाज के अवशेष भी बर्तमान रहते हैं।देखा जा सकता है कि हर्ष की मृत्यु के बाद (हत्या) उसके दुश्मनों उच्चल और सुस्सल ने उसके राज्यों को वांट लिया। सुस्सल को लोहर का प्रदेश मिला। इस काल में जभीन्दारों का शामंतशाही जमीन्दारों का तबका डामर थे जिनके पास जमीन का सकेन्द्रण था और वे आपस में अपनी जमीनी सम्पति को बढ़ाने के लिए लड़ते रहते थे। कश्मीर की स्थिति ऐसी बन गई थी कि सामंती राजे डमरों का विरोध करके सत्ता में नहीं वने रह सकते थे।देखा जा सकता है कि उच्चला हमेशा राजा के खिलाफ संघर्ष करते रहने वाले डामरों के बीच फुट डालें और उन्हें आपस में लड़ाते रहने के अलावा अन्य किसी तरीके से शासन में नहीं रह सकता था।उसके इस कृत्य में लोहर का गर्गचन्द्र उसका सहायक था। 1111 (ग्यारह सौ ग्यारह) में उसी को अधिकारियो ने षडयंत्र करके उसकी हत्या कर दी और राजनीतिक अस्थिरता का आलम यह था कि इसके बाद रड्ग नाम का एक अधिकारी इसके बाद मात्र एक दिन के लिए सिंहासन पर वैठा मगर एक अकर्मण्य राजा के नाम पर गर्गचन्द्र चार माह तक गद्दी पर वैठा तव सुस्सल ने उसके साथ समझौता करके खुद राजा वन गया।

राजनी'तिक अरिथरता का यह क्रम थमा नहीं बल्कि वह और आरजकतापूर्ण ढंग से सामने आया। गर्गचन्द्र का राज्य कत्ल, हत्या,खून खराबा,विद्रोह का

काल था और इसी अराजक स्थिति में गर्गचन्द्र की हत्या करके उसके हाथ से गद्धी छीनी गई। गर्गचन्द्र के हट जाने पर हर्ष कि निप्ला मिक्षाचर के नेतृत्व में डामरों ने विद्रोह कर दिया और 1120 से 1121 तक डामर कश्मीर की सत्ता में रहे। सुस्सल ने अब पूनः शक्ति अपने हाथ में ली तब देश में गृह युद्ध छिड़ गया जो 1128 तक चलता रहा। मगर एक षडयंत्र के द्वारा,जिसे उसने अपने विरोधियों के खिलाफ खड़ा किया था,वह स्वयं मारा गया। उसकी हत्या के बाद उसका पूत्र जय सिंह उसका उत्तरा धिकारी बना,मगर जो गृह युद्ध शुरू हुआ था वह 1128 तक चलता रहा और उसने राज सत्ता को अपने हाथ मे तो रहा मगर अपने पिता जैसी वीरता के साथ नहीं अपितु सामतशाही मुखियों को प्रसन्न करके। दो साल के बाद जब भिक्षाचर मार डाला गया मगर एक नए दावेदार को खड़ा होते देखा गया हलांकि 1135 तक कुछ शान्ति का वातावरण रहा मगर 1143 में एक नया संकट खड़ा हुआ जब दरद जनजातियों की सहायता पाकर राज कुमार भोज विद्रोह कर वैठा। मगर कुटनीति के द्वारा इस विद्रोह को शान्त कर दिया गया। 1149 में कल्हण ने अपनी महान कविता का आरम्भ किया और एक साल में उसे समाप्त कर दिया।2

सहित्य समीक्षा

राजतरंगिणी का यही काल या 1110-1111 का काल जो काल कश्मीर में राजनीतिक विद्रोहों हत्याओं षडयंत्रों का काल था। कारण था कि सामंती शासन अपने प्रारंभिक चरण में थे और सामंतवाद अपनी संपूर्णता में विकसित नहीं हो सका था, मगर यह संक्रमण के दौर से गुजर रहा था। संक्रमण काल की पीड़ा से कश्मीर गुजर रहा था अब डामरों,सामंतशाही राजवाड़ो के वीच का अन्तर्विरोध वढ़ता जा रहा था।इसके साथ-साथ आदिवासियों के बीच भी असंतोष की लहर जग रही थी। यानि कश्मीर की उस काल की संस्कृति एक ऐसे बदलाव के काल की संस्कृति थी जो संक्रमण कालीण उथल-पुथल के वीच आगे बढ़ती है क्योकि उत्पादन सम्बन्धों में वदलाव आते हैं।

कश्मीर में इस वदलाव को या इस वदलाव के कालों का विश्लेषण किसी के द्वारा लिखे गए कश्मीर के इतिहास पर कल्हण की राजतरंगिणी के सम्पन्ध मे विती मिलता एक महत्वपूर्ण रचना के रूप में स्टेइन की रचना को ली जाती है। इस पुस्तक में भी तथ्यों और आँकड़ो को जो इकट्ठा किया गया है मगर उनका कोई विश्लेषण नहीं किया गया है। मो० हसन द्वारा रचित पुस्तक हिस्ट्री औफ कश्मीर सर डब्लू ली शन्स की पुस्तक वैली औफ कश्मीर या डा० साबिर आफताब की रचना जल-व-कश्मीर आदि ऐसी पुस्तकें हैं जिनका कोई सैद्धान्तिक आधार नहीं है।उस काल का साहित्य और इतिहास जिस रूप में मिलता है वह दिखाता है कि राजाओं के दरवारियों ,सैनिकों,कर्मचारियो आदि की निष्ठा राजा के प्रति नहीं थी।अगर कोई दृढ़ निश्चई राजा की हत्या कर देता था तव सारे दरवारी लोगों, सैनिकों आदि के बीच भगदड़ मच जाती थी।इसका मुख्य कारण था कि सिंहासनारूढ़ होने वाले व्यक्ति की स्थिति के सम्बन्ध में नहीं कहा जा सकता कि इसकी नियति क्या होगी। आम नागरिक जनता की प्रतिवद्धता किसी खास राजा के साथ नहीं रहती थी खास कर राजपूत और विदेशी भाड़े के सैनिकों परही राजाओं को बड़े युद्धों के लिए भरोसा करना पड़ता था। साक्ष्य दिखाते हैं कि समान्य जनता/नागरिक अकर्मन्य और आराम तलब थे कभी इस राजा की स्तुति करते तो कभी दूसरे राजा की।डामर सवसे कठोर और शोषक प्रवृति के लोग थे जो हमेशा ग्रामीणों को कष्ट देते, अक्सर मिलने पर राजधानी के क्रमचारियों और ब्राह्मणों को लूटा करता इस कारण उनके प्रति जन आवाम में काफी घृणा थी।डामर समाज के सवसे वड़े शोषक थे,क्योकि जमीन जो उत्पादन का मुख्य श्रोत थी ज्यादातर उन्हीं के पास थी। अपने अत्याचारी कार्यो के कारण जो डामरों के निम्नस्तरीय उदभव का प्रतीक था,लोग उससे अप्रसन्न चे। आधिकारी वर्ग और पुरोहित का भी आचरण ठीक नहीं था,पुरोहित उन दिनों धर्मास्त कला से आमिशप्त थे, पुरोहित अपने अपने आधिकार में प्रमुख धर्मस्व रखे हुए थे और अपने गम्भीर उपवासों द्वारा उनकी मागों की अनापूर्ति में मृत्यु प्रयन्त चल सकते थे,धटनाओं की प्रगती को प्रभावित करना चाहते थे। कश्मीर की संस्कृति में, ऐसा लगता हैकि देव मंदिर स्मारक,म्हल आदि के लेखों को उकीर्ण करने की एक परम्परा सी चली आ रही थी जिसका उपयोग इतिहास के श्रोत के रूप में किया जा सकता था और कल्हण ने उनका उपयोग अपने लेखन में किया भा। कल्हण ने स्वयं स्वीकार लिया है कि साधारणतः ताम्र पत्रों पर उत्कीर्ण भूमि अनुदान अथवा विशेषाधिकारों के लिए लेखों का,प्रशस्तियों यानि देव मंदिरों और अन्य महलों पर खुदी गई स्तुतियों और प्रशंसाओं को और इस तरह के अन्य श्रोंतों का उपयोग कल्हण ने किया था। 3 कश्मीर में ऐसे अभिलेखों सिक्को आदि का निरीक्षण किया था। इसके अलावा कल्हण के लेखन में भूरिश पाए जाने वाले पवित्र इमारत्तों ,भूमि अनुदानों आदि का जो विवरण कल्हण ने दिया है उससे इन तथ्यों की पुष्टि हो जाती है।यह प्रमानित हो जाता है कि उस काल के कश्मीर में साहित्य, इतिहास, धर्म कला आदि,जिन्हें संस्कृति के अवयव के रूप में आज भी माना जाता है,वह उच्च और कुलीन लोंगों की संस्कृति थी जो कश्मीर की प्रधान संस्कृति थी। राजाओं के नामों, उनकी प्रशस्तियों,देवालयों,पवित्र महलो पर अंकित अभिलेखों में जिन तथ्यों का विवरण किया गया रहता था वह इन्हीं विशेषाधिकार प्राप्त वर्गौ के सम्वन्ध में रहत्ता था। इसके दूसरी तरफ गरीब और असहाय लोगों की संस्कृति का एक अलग खेमा था जिसमें अभिलेखो, स्मृति पत्रों,ताम्र फत्रों आदि का कोई आधार नहीं था,यह संस्कृति शोषित जनता की तकलीफों,उसके अभावग्रस्त जीवन आदि को नाटकों,गीतों आदि में रखा जाता था। इस संस्कृति में नाटक या संगीत समारोह कुलीनो की संस्कृति की तरह वड़े-वड़े नाट्य शालाओं में न होकर खुले आसमान के नीचे किए जाने की परम्परा थी,और जिसे समान्य रूप से गावों में उपलब्ध वाद्ययंत्रो के द्वारा प्रदर्शित किया जाता था खास कर मेलों आदि समारोहों के समय ऐसे सांस्कृतिक कार्य श्रमों का आयोजन हुआ करता था। अभिजात्य वर्ग की संस्कृति का एक पक्ष यह भी था कि ललित कला के केन्द्र ज्यादातर देव मंदिर होते थे जहाँ देवदासियां ही प्रधान नर्तकी या गायिका के रूप में दीक्षित रहती थी। उस काल के राजाओं की भोग लिप्सा की पूर्ति के लिए भी इन देव दासियों का उपयोग किया जाता था।ग्रामीण गरीबों की संस्कृति में यह पक्ष नहीं था।

कल्हण: एक इतिहास पुरूष

जब कल्हण की राजतरंगिणी को एक इतिहास पुस्तक वणा कल्हण को एक इतिहास पुरूष के रूप मे मूल्यांकन किया जाने लगेगा तब कल्हण का इतिहास दर्शन थूसीडाइडस (Thucydides) पोलिवियोस (Polybios) से तुलना नहीं की जा सकती। इन दोनों के ग्रंथों को सामने २रहते हुए भी रोमन विचारधारा इसी से खुश थी कि इतिहास में प्रवचन शास्त्र पर अधिकार के प्रदर्शन के लिए तथा नैतिक सिद्धान्तो की शिक्षा के लिए अवसर मिलना चाहिए। लेकिन कल्हण का लक्ष्य था ऐसी पुस्तक की रचना जो प्रवचन शास्त्रज्ञों की नहीं क्योंकि भारत वर्ष में प्रवचन शास्त्रज्ञ हुए ही नहीं वरण अलंकार शास्त्र पर लिखने वालों की मांगों की पूर्ति के साथ-साथ अपने पाठकों को नैतिक शिक्षा दे सके। अपने साहित्य लेखन मे कल्हण उपर वर्णित कयने प्रथम लक्ष्य के सम्वन्ध में कहते हैः " सच्चे कवियों की वह अदभूत शक्ति प्रशंसा के योग्य है जिसका गहत्व अमृत पान के महत्व से भी अधिक होता है,क्योंकि उसके द्वारा केवल उन्हीं के यश: शरीर नहीं अपितु दूसरों के भी स्थैर्य को पाते है। यह कवि की केवल निर्माण की प्रतिमा ही है जो अपनी सौंदर्य प्रसूति की शक्ति द्वारा अतीत काल को मनुष्यों की आखों के सामने लाकर रख सकती है। जिस कठिनाई का उन्हें सामना करना है उसे वे स्वीकार करते है 4 इन पंक्तियों का सार यही है कि

कल्हण 'आधार और संरचना ' के नियमों का अनजाने अनुशरण करते हैं और इस तथ्य को भी स्वीकारते हैं कि वर्तमान अपने को प्रकट करने में अपने भूत की वहुत सारी अभिव्यक्तियों के साथ रहता है और समाज के प्रवुद्ध वर्ग का काम हे कि वह असंगत होती जा रही वातों को अलग करे और विकास को नई विचारधारा को आत्मसात लायक बनाए।

नैतिक शिक्षा का जो आधार राज तरंगिणी में इसके आलोचक या विश्लेषक खोजते हैं उसका आधार मन की उस स्थिति पर है जो मनुष्यों की जगत में क्षण भंगुर स्थिति के कारण उत्पन्न होती है। मगर संसार के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर अगर ऐसे कथनो का विश्लेषण किया जाय तब जगत की क्षणभंगुरता का विवरण जहाँ आता है वहाँ यह स्पष्ट वैज्ञानिकता का पुष्ट है कि संसार में प्रत्येक वस्तु नाशवान है और दुनियाँ, इसी वैज्ञानिक नियम से संचालित होती है संसार में एनर्जी का रूप वदलता है उसका विनाश कभी नहीं होता। चूंकि कल्हण के काल में विज्ञान और तकनीक इसे प्रमाणित करने में सक्षम नहीं थी इस कारण बदलाव को किसी दैवी शक्ति का कृत्य मान लिया जाता है। 5 जीवन की नश्वरता और कर्म फल के परिणाम स्वरूप जिन राजाओं का जीवन आखिर में कष्ट प्रद हुआ उनकी कथाओं को जानबुझ कर और वहुत सारे मनोवादी वैचारिकता के आधार पर इसे प्रमाणित करने का उपाय किया गया है।ऐसी प्रवृति कल्हण की अपनी प्रवृति नहीं है वल्कि उनके पहले के लेखनों मे भी इसे देखा जा सकता है।कल्हण की वैज्ञानिक अवधारणा की अस्कीकृति का कारण विज्ञान और तकनिक की पिछड़ी अवस्था के साथ-साथ पहले के लेखने में जिस तरह रामायण और महाभारत में लिखे गए अर०यानों को विना तोड़-मड़ोड के सही मान लेने की एक परम्परा सी चली आ रही थी उसी के अनुकुल कल्हण ने भी उन कथनो और कथानकों पर कोई टीका टिप्नी नही की, जिस कारण कल्हण को भी उसी विचारों का अनुयायी मानते हुए उनके स्वयं के लेखनों की व्यारव्या में कल्हण को भी वैज्ञानिक दृष्टि कोण वाला इतिहासकार मान लिया गया।कल्हण की वैज्ञानिकता का आधार उसके काल की कश्मीर की चार्मिक और सास्कृतिक परम्पराओं की तुलना में काफी कमजोर थी क्योंकि इसके भौतिक आधार अभी निर्माण की प्रक्रिया में थे और वर्तमान सामंती और अर्ध दासप्रया के सम्मिलित आर्थिक सामाजिक सम्बन्धों की तुलना में काफी कमजोर थे।इस कारण सामाजिक -सांस्कृतिक विकास को उच्चतर मंजिल की तरफ ले जाने वाली उदीयमान शक्ति भी अभी काफी आविकीसत थी और कोई वैर्काल्पक आधार पैदा करने की क्षमता से रहित थी। कश्मीर की संस्कृति के वैज्ञानिक विकास में एक अन्य कारक जो मजबूती से आड़े आता था, वह था - जिसे माको पोला ने कश्मीर को जादू-टोना और वशीकरण के पैशाचिक क्रिया के लिए प्रसिद्ध था। 6 मगर कल्हण जव इन जादू टोना को जव मृत्यु के कारण के रूप में स्वीकारते है 7 यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि रोमन लोंगों द्वारा 8 और मध्य काल में भी विष को राजाओं की मृत्यु का एक स्वभाविक कारण माना जाता था। इन व्यापक स्वरूप में फैले अंध विश्वासों को जिस वृहद पैमाने पर कश्मीर की संस्कृति धारण किए हुए थी उसमें किसी तरह की छेड़-छाड़ का काम करना कल्हण के लिए भी सम्भव नहीं था। इस कारण उन्होंने इनका ज्यों का त्यों वर्णन कल्हण ने भी कर दिया एक तरह के सामाजिक आर्थिक दवावों में कल्हण ने उनका उल्लेख किया किसी समाजिक-आर्थिक बिकास के परिणाम के रूप में उन्हें नहीं अपनाया। युगों के सम्वन्ध में संसार का जो प्रचलित सिद्धान्त था उस हिसाव से कल्हण कलयुग में रह रहे थे जिसमें सारे मानवीय गुण रहासोन्मुख दिशा में जाकर निकृब्ट स्थान पकड़ लिए थे। इस कारण कल्हण की सोच थी कि वर्त्तमान को भूत की कसौटी पर ऐसी स्थिति में कसना कोई तर्क संगत समझ नहीं हे।

जहाँ तक धर्म के प्रभाव का प्रश्न है अन्य राजाओं में अशोक का पूत्र जलौक है जिसका विवरण प्रथमरङ्ग में मिलता हे जो अन्यत्र अज्ञात है। कुषाणों के स्मृति हुष्क जुष्क और कनिष्क के नामों में पाई जाती है।ये सब वौद्ध माने गए हैं। उसके अनन्तर ब्राह्मण धर्मानुयायी भाभिमन्यु आता है, जिसने महाभाष्य के अध्ययन को प्रोत्साहित किया था। कहा जाता है कि धार्मिक प्रतिस्पर्द्धा और संस्कृतियो के बर्चस्व के संघर्ष में अभिमन्यु ने एक ब्राह्मण नीलनाग की सहायता से कश्मीर को बौद्ध धर्म के शाप से कश्मीर को बचाता है और हिमपात से कश्मीर की रक्षा करता है। यह कथा नीलमत के अख्यानों का रूपान्तरण है जिसमें सच्चाई का भाव नहीं दिखता क्योंकि इन उत्पातों का हेतु पिचासों को बताया गया है।इससे प्रमाणित होता है कि कश्मीर की संस्कृति में अबैज्ञानिक तौर पर मान्यता प्राप्त घटनाओं, भूतों और पिशाचों के अस्तित्व को स्वीकार करने और उनके द्वारा राजाओं और आम जनों को परेशान किए जाने की स्वीकृति उस सामंती काल की संस्कृति के स्वरूप को उपस्थित करती है, जब समाजिक अज्ञानता के कारण हर प्रकार के प्राकृतिक आपदा को भूतों-पिचासों का कारण माना जाता था।अंध विश्वासों का प्रभाव इतना मजबूत था कि रणादित्य राज्यकाल का अन्तिम राजा वालादित्य इस भविष्यवाणी के सत्यापन को बचाने के लिए कि- उसका जमाता उसका अतराधिकारी होगा- अपनी पुत्री का विवाह एक छोटे अधिकारी पर्लभवर्द्धन से कर दिया। परन्तु जमाता राजा का कृपा पात्र हो गया उसने सम्मान की भावना को छोड़कर अमात्य खंरव का अपनी पत्नि के साथ गुप्त प्रणय करने का अपराध क्षमा कर दिया और वह राजा की मृत्यु पर कार्कोट बंश के प्रथम राजा के रूप में सिहांसन पर वैठा दिया गया। इस प्रकार भाविष्यवाणी की घटना का प्रभाव इतना मजबूत था कि कश्मीर में राज सिंहांसन ही बदल गया।

निष्कर्ष

कल्हण कालीन कश्मीर समाज बदलाव की एक संक्रमण कालीन अवस्था में था जहॉ उत्पादन सम्वन्ध नये बर्गों के विकास के कारण क्रमिक गति से बदलाव की प्रक्रिया में आनेवाली पीड़ा को झेल रहा था। भूमि का स्वामित्व डामरों के सायों में सिकुड़ता चला जा रहा है और इस प्रक्रिया में जो नया उलपादन सम्बन्ध वन रहा था वह पहले की तुलना में ज्यादा शोषण का था,और उसी उत्पादन प्रक्रिया के आधार पर समाज का बाहरी संरचना खड़ा हो रहा था जो वैज्ञानिक सोंच से अभी काफी दूर था। धार्मिक अंधविश्वास भूत-पिशाच भाग्य और भगवान का प्रभाव काफी मजबूत था। अभिजात वर्ग की संस्कृति समान्य जनों की संस्कृति से भिन्न थी और उसका केन्द्र.देव मंदिर थे जहाँ देवदासियों के द्वारा कला का प्रदर्शन होता था और ये देवदासियाँ राजाओं की भोग लिप्सा को तृप्त करने का साधन भी था। संक्षेप में कहा जा सकता है कि उस काल की संस्कृति निर्माण के दौर में था और इसक्रा विभिन्न रूपों में प्रस्फुटन हो रहा था।

संदर्भ सूची

1. "माल" 'माल' उत्पादन से तात्पर्य है उत्पादित सामानों को वाजार में बेच कर मुनाफा अर्जित करना।
2. डा. ए. बी. कीथ, ' संस्कृत साहित्य का इतिहास(अनुवाद) डा. मंगल देव शास्त्री, मोती लाल बनारसी दास दिल्ली, भुम्वई,चेन्नई,कोलकत्ता,वंगलूर, वाराणसी, पटना, 2016,पृ. 200.
3. उपरोद्धत (कीथ द्वारा उद्धृत) पृ. 203.
4. उपरोद्धत 1/16.
5. 5. उपरोद्धत 1/23.
6. यूले (yule) |. 175, बुहलर,रिपोर्ट पृ. 24.
7. चाणक्य, अर्थशास्त्र शत्रुओं के खिलाफ इसी उपाय की गम्भीरता के साथ प्रशस्ति करता है।
8. उदाहरणार्थ टैसीटस (Tacitus), एन्न (Ann), iii. 17, Pliny, H.N.; XXIX, 20, Mayor on Juvenal. XIV. 252 ff.